SOCIAL PSYCHOLOGY

B.A. (Hons) Part - III

Paper - V

By - Dr. Ramendra Kr. Singh

Deptt of Psy.

D.K. College, Dumraon (Buxar)

VKSU, Ara

SOCIAL TENSION
CAUSES & REDUCING MEASURES

सामाजिक तनाव एक गंभीर समस्या है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिये यह अभिशाप बन चुका है। हमारे देश में कई बार ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं जो सामाजिक ताने-बाने की चूलें हिला कर रख देती हैं। इस तरह की स्थितियों का खामियाजा देश और समाज को भुगतना पड़ जाता है। ऐसी स्थिति में इनके कारणों एवं निराकरण के उपायों को ढूंढना अति आवश्यक हो जाता है।

कारण :- सामाजिक तनाव के पीछे कई प्रकार के कारणों का हाथ होता है। कुछ कारण विशिष्ट स्वरूप के होते हैं तो कुछ कारण सामान्यस्वरूप के होते हैं। इन समस्त कारणों को हम निम्न प्रकार से प्रस्तुत कर सकते हैं :-

(1) मनोवैज्ञानिक कारण :- सामाजिक तनाव को उत्पन्न करने में मनोवैज्ञानिक कारणों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कुछ प्रमुख मनोवैज्ञानिक कारक —

(i) निराशा :- कुण्ठा का आगमन तब होता है जब हम अपने उद्देश्य या लक्ष्य को पाने में असफल हो जाते हैं। जब खास समूह के लोगों की आवश्यकता एवं लक्ष्य की पूर्ति में दूसरे समूह के लोग बाधा डालते हैं तो सामाजिक तनाव पैदा होता है क्योंकि पूरा समाज उग्र एवं व्यथित हो जाता है। इससे सम्पूर्ण समाज में एक तरह की निराशा की

की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। समाज में बदले की भावना बलवती हो जाती है जो Social tension का रूप ले लेती है। डोलार्ड (1939) आदि का कहना है कि "आक्रमण तथा हिंसा का आधार कुंठा है।" साम्प्रदायिक तनाव, जातिगत दंगों youth tension में ये बातें पाई जाती हैं

(ii) प्रतियोगिता/प्रतिस्पर्द्धा :- कई बार आपसी प्रतिस्पर्द्धा तनाव के कारण बन जाते हैं। एक वर्ग के लोग दूसरे वर्ग के लोगों से आगे निकलने के लिये प्रतिस्पर्द्धा रखते हैं। जब प्रतिस्पर्द्धा नकारात्मक या अस्वस्थ स्वरूप के होते हैं तो Social tension का कारण बन जाता है।

(iii) घृणा प्रवृत्ति एवं विध्वंसक प्रवृत्ति :- मनोविश्लेषकों का मानना है कि जब समाज में विध्वंसक प्रवृत्ति के लोग बढ़ जाते हैं तो ऐसे लोग दूसरे समाज के लोगों से घृणा फैलाते हैं जिससे प्रभावित होकर दूसरा समाज भी तोड़फोड़ करने के लिए अग्रसर होता है। यह Social tension का कारण बनता है।

(iv) असुरक्षा का भाव :- यह भी एक मनोवैज्ञानिक कारक है, जब किसी खास समूह के लोग असुरक्षित महसूस करने लगते हैं तो पूरा समाज तनाव में आ जाता है। लोग भविष्य को लेकर बेचैन रहने लगते हैं। मंडल कमीशन के लागू होने के समय अगड़ी एवं पीछड़ी जाति के बीच इस तरह का तनाव देखने को मिल रहा था।

② सामाजिक कारण :- सामाजिक तनाव के लिये कई बार सामाजिक विश्वास, मूल्य, मानदण्ड आदि का भी हाथ होता है। कई बार एक समाज से दूसरे समाज की विचारधाराएँ मेल नहीं खाती हैं जिससे तनाव पनपता है। हमारे देश में भिन्न-भिन्न मान्यताओं धर्मों आदि को मानने वाले लोग रहते हैं। एक को अपनी मान्यताओं एवं धर्म को दूसरे से श्रेष्ठ समझते हैं, जो Social tension Communal tension & Caste riot के लिए उत्तरदायी है।

क्रेच एवं क्रचफिल्ड तथा वैलेशली के शब्दों में :-

"वस्तुतः एक समाज की विचारधारा का उत्थान दूसरे विचारधारा के विनाश के बिना संभव नहीं है दोनों साथ-साथ नहीं चल सकते।"

स्पष्ट है कि धार्मिक मान्यताएँ एवं आदर्श सामाजिक तनाव का कारण होता है

(3) आर्थिक कारक एवं जातीय स्थिति :- सामाजिक तनाव के लिये आर्थिक कारक एवं जातीय स्थिति भी जिम्मेवार होता है। हिन्दू जाति में ऊँची जाति एवं नीची जाति की भावना छुआछूत आदि कई बार सामाजिक तनाव का कारण बन जाता है। इसी प्रकार आर्थिक विपन्नता भी इसके लिये जिम्मेवार है। एक बड़ा तबका आर्थिक रूप से विपन्न है जबकि कुछ लोग सारी सुविधाएँ भोग रहे हैं। इन अलागे में class riot आदि होने की संभावनाएँ पनती है। आर्थिक विपन्नता एवं गरीबी से लोगों के अन्दर विद्रोह एवं असन्तोष पैदा होता है जो Social tension का कारण बन जाता है।

(4) धार्मिक कारण :- हमारे देश में सामाजिक तनाव एवं साम्प्रदायिक तनाव के पीछे धार्मिक विचारधाराओं का बहुत बड़ा हाथ रहता है धार्मिक मान्यताओं एवं विश्वासों के चलते अनेक मतावलम्बियों में वैरभाव का उद्भव होता है। हिन्दू मूर्तिपूजक हैं। ये लोग काफीर हैं, तो मुसलमान मलेछ हैं, ये अपवित्र होते हैं। इस तरह की विचारधाराएँ कई बार Communal riots के लिए कारण बन जाते हैं। इसी तरह निम्नजाति के हिन्दुओं को मंदिर में जाने से मँदिर अपवित्र हो जाता है। अतः उन्हें मंदिर में नहीं जाने दिया जाता जो caste riots, caste tension का कारण बन जाता है। गाय खाना चाहिये। गाय नहीं मारना चाहिए, पवित्र पशु है। गाय माँ सादृश्य है। इस तरह की बातें सामाजिक तनाव के लिये जिम्मेवार हैं।

(5) राजनीतिक कारण :- सामाजिक तनाव के लिए कई बार राजनीतिक कारक जिम्मेवार होते हैं। राजनीतिक दलों की मान्यताएँ, विचारधाराएँ मूल्य और उनके अनुयायियों की कट्टरता Social tension को जन्म देता है। कई राजनीतिक नेता अपनी रोटी सकने के लिए स्वार्थ को प्राथमिकता बन जाते हैं और गलत बातें आदि फैलाकर सामाजिक ताना-बाना को कमजोर करने से नहीं चुकते हैं। मुस्लिम लीग, आर० एस० एस०, जमायते इस्लामी आदि की परस्पर विरोधी एवं कट्टरता कई बार भारत में साम्प्रदायिक दंगे एवं तनाव के लिए उत्तरदायी रहा है।

(6) सांस्कृतिक कारक :- इसी तरह सांस्कृतिक मूल्य एवं विश्वास भी

कई बार एक संस्कृति से दूसरे संस्कृति के लोगों के बीच तनाव पैदा करता है।

ऐतिहासिक घटनाएँ :- कुछ अतीत की ऐतिहासिक घटनाएँ इस तरह की प्रभाव बनाये रखती हैं जिसे लोग भूल नहीं पाते हैं और बदले की भावना में जलते रहते हैं। मुस्लिम शासन काल के समय भारतीय हिन्दुओं पर किये गए अत्याचार एवं आपत्तिजनक व्यवहार हिन्दुओं को मुसलमानों के प्रति अच्छी भावना नहीं पनपने देती है। इतिहास की घटनाएँ इस तरह चोट करती हैं कि दोनों सम्प्रदाय में आपसी विश्वास दरक जाता है और Communal tension का रूप में फूट पड़ता है।

भौगोलिक कारक :- भौगोलिक कारण क्षेत्रवाद एवं अलगाववाद आदि की भावना को उत्पन्न करता है। भौगोलिक कारणों के चलते भाषा, रहन-सहन, रीति रिवाज आदि अलग-अलग हो जाती है जो कई बार तनाव का कारण बन जाता है। जैसे आदिवासी एवं गैरआदिवासियों के बीच पनपने वाला वैरभाव एवं तनाव आदि। मोरिस के अनुसार :-

"जिस भौगोलिक भूभाग में बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने की अधिक आवश्यकता होती है, वहाँ सामाजिक तनाव एवं वर्ग संघर्ष अधिक होता है।"

नेता तथा उनकी विशिष्ट अभिरुचियाँ :- कई बार यह देखने को मिलता है कि सामाजिक तनाव को हवा देते हैं। लोग इनके प्रभाव में आकर बगैर सोचे समझे विश्वास कर लेते हैं और दूसरे समूह के प्रति गलत व्यवहार करने पर आतुर हो जाते हैं। इससे गलत धारणाएँ एवं विश्वास पैदा होता है। नेता अपनी राजनीतिक रोटी सेकने के लिए अपने चहेते वर्ग के लोगों की विश्वास जीतने के लिए सामाजिक दूरी पैदा करते हैं जो Social tension का कारण बनता है।

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि सामाजिक तनाव राष्ट्र एवं समाज के लिए घातक है। इससे समाज की गतिशीलता एवं समरसता बुरी तरह से प्रभावित हो जाता है। सामाजिक तनाव के लिए कई कारक जिम्मेवार हैं जिनकी व्याख्या ऊपर की जा चुकी है।